बिहार विधानसभा : आसान नहीं भाजपा की राह

शिवशंकर

बिहार विधानसभा चुनाव भाजपा के लिए कड़ी चुनौती के रूप में सामने है। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए भी जीवन.मरन का प्रश्न बन गया है। भाजपा अपनी पूरी ताकत इस चुनाव में झोंक रही है, साम-दाम, दंड-भेद सारी नीतियां अपना रही है, लेकिन राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बिहार में भाजपा की राह आसान नहीं है। बहुत से लोगों का तो ये भी मानना है कि स्वयं नरेंद्र मोदी अपनी घटिया प्रचार शैली के कारण भाजपा के लिए समस्याएं खड़ी कर रहे हैं। अब तक जहां भी नरेंद्र मोदी ने प्रचार किया है, वहां से जो खबरें मिल रही हैं, वो भाजपा के पक्ष में नहीं हैं। नरेंद्र मोदी प्रचार के दौरान नीतीश कुमार, लालू प्रसाद और अन्य विरोधी नेताओं पर जैसे आरोप लगा रहे हैं और जैसी भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं, उसे बहुत ही घटिया दर्जे का माना जा रहा है। लोगों का कहना है कि ऐसी भाषा प्रधानमंत्री पद पर बैठे व्यक्ति की गरिमा के अनुरूप नहीं है। जिस प्रकार नीतीश कुमार के डीएनए और लालू प्रसाद के जेल जाने की बातें उन्होंने की है, उससे भाजपा के खिलाफ ही माहौल बनता जा रहा है। डीएनए खराब होने की मोदी की बात को नीतीश कुमार ने बिहार की प्रतिष्ठा से जोड़ कर भाजपा पर प्रति प्रहार शुरू कर दिया है। वहीं, लालू प्रसाद ने भी उन पर करारा हमला किया है। मोदी ने अपने प्रचार भाषणों में बिहार को बीमारू राज्य बताया, जिसका नीतीश कुमार ने खंडन किया है। उन्होंने कुछ ऐसे तथ्य पेश किए हैं जो दिखाते हैं कि बिहार के मुकाबले भाजपा शासित राज्य कहीं ज्यादा पिछड़े हैं और कुशासन के उदाहरण वहां कुछ ज्यादा ही मिल रहे हैं। नरेंद्र मोदी ने जनता दल यूनाइटेड और राष्ट्रीय जनता दल का उपहास करते हुए जो उनका जो नया नामकरण किया, उससे भी उनकी हंसी ही उड़ रही है। ऐसा लगता है कि बिहार में मोदी के चुनाव प्रचार का नकारात्मक असर ही वोटरों पर पड़ रहा है। अपने भाषणों में उन्होंने बिहार का मजाक उड़ाकर वहां के लोगों को काफी हद तक नाराज कर डाला है। दरअसल, मोदी हर जगह एक ही जैसा भाषण देते हैं, एक ही बातें दोहराते हैं, एक ही तरह के वादे करते हैं, जिन्हें सुन.सुनकर जनता उब गई है। मोदी जब बोलते हैं, तो अपने पद की गरिमा का जरा भी ख्याल नहीं करते, यह उनके चरित्र की अपनी खासियत है। वे अपना असली चेहरा दिखा ही देते हैं। बहरहाल, जो स्वांग वो करते हैं, उससे जनता का मनोरंजन जरूर होता है, पर बार.बार एक ही बात सुनकर वोटरों को भी यह महसूस होने लगा है कि भाजपा के पास जुमलों की भी कमी पड़ती जा रही है।

बिहार में भाजपा के पास नीतीश कुमार के मुकाबले मुख्यमंत्री पद का कोई उम्मीदवार नहीं है। यह भाजपा के साथ सबसे बड़ी समस्या है। दूसरी तरफ गैरभाजपा गठबंधन में सीटों के बंटवारा हो चुका है। जदयूए राजद और कांग्रेस को जिस हिसाब से सीटें दी गई हैं, उससे लगता है कि भाजपा को मात खानी पड़ेगी। इसकी एक वजह ये भी है कि लोकसभा चुनावों की तरह अब कहीं भी मोदी लहर जैसी की चीज नहीं है, बल्कि उल्टे मोदी का प्रभाव बहुत ही कम हो गया है। एक साल से भी ज्यादा हो जाने के बाद भी मोदी सरकार ने कोई ऐसा काम नहीं किया है, जिससे जनता को मामूली राहत भी मिली हो। सच्चाई तो ये है कि मोदी सरकार ने अब तक जो भी किया है, उससे जनता की परेशानियां बढ़ी ही हैं और अब लोग ये सोचने लगे हैं कि इससे तो बेहतर कांग्रेस की मनमोहन सरकार ही थी। यह अलग बात है कि कांग्रेस सरकार महाभ्रष्ट और नाकारा थी, जिससे परेशान होकर लोगों ने बदलाव की उम्मीद में मोदी को जिताया, पर अब उसे अपने निर्णय पर अफसोस तो हो रहा है। भारतीय राजनीति की यही विडंबना रही है कि जनता एक दल अथवा गठबंधन के शासन से दुखी हो जब किसी दूसरे को मौका देती है तो उससे भी उसका मोहभंग होते देर नहीं लगती। खास बात ये है कि मोदी के शासन से जनता का मोहभंग जितनी जल्दी हुआ है, उतनी जल्दी किसी दूसरी पार्टी अथवा नेता से नहीं हुआ। मोदी, अमित शाह और संघ को यदि यह लग

रहा हो कि जातिगत समीकरण के सहारे वे बिहार चुनाव की वैतरणी पार कर सकते हैं, तो इसे उनकी खामख्याली ही कहा जा सकता है। जातिगत समीकरण साधने के उद्देश्य से ही नरेंद्र मोदी को ओबीसी लीडर के तौर पर भी प्रचारित किया गया, पर जहां जातिवादी राजनीति करने वाले दिग्गज लालू और नीतीश मौजूद हों, वहां अब तक अगड़ों की राजनीति करने वाली और ब्राह्मणवादी मानी जाने वाली भाजपा किस हद तक वोट बटोर पाएगी, ये समझ पाना मुश्किल नहीं। लालू.नीतीश पिछड़वाद की राजनीति करने वाले नेताओं में अव्वल हैं, जैसे यूपी में मुलायम। पिछड़ावाद के आधार पर इन्हें पछाड़ पाना भाजपा के लिए दिवास्वप्न ही साबित हो सकता है।

बिहार में नीतीश और लालू के परंपरगत वोट बैंक में सेंध लगा पाना भाजपा के लिए आसान नहीं होगा। कांग्रेस और लेफ्ट स्वाभाविक रूप से नीतीश.लालू के साथ हैं। इनका एक ही उद्देश्य है कि किसी तरह भाजपा को बिहार में पटकनी देना और इसके बाद राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा विरोधी गठबंधन को मजबूत करना। कुल मिलाकर बिहार के चुनाव परिणाम राष्ट्रीय राजनीति में संभावित नए परिवर्तनों का संकेत देंगे। इसके बाद देश में भाजपा के शासन के विरोध में राजनीतिक दल एकजुट हो सकते हैं। दूसरी तरफ, भाजपा में चुन.चुन कर उन लोगों को लिया जा रहा है, जो दागी हैं। ये राजद और जदयू के असंतुष्ट लोग हैं जो भाजपा के लिए वोट बटोरू हर्गिज साबित नहीं हो पाएंगे। जिस जीतन राम मांझी से मोदी को उम्मीद है कि वे महादलित वोट उन्हें दिलवा सकते हैं, उनका आधार बहुत खोखला है। पप्पू यादव, लवली आनंद और इस तरह के लोग जब नीतीश.लालू के लिए किसी काम के नहीं रह गए, तभी इन्हें बाहर का रास्ता दिखाया गया और तब इन्होंने भाजपा की शरण ली। ये खुद जीत जाएं यही बड़ी बात होगी, भाजपा की मदद ये क्या कर पाएंगे। रहा मुस्लिम वोट तो भाजपा उसकी आशा नहीं करती और मुस्लिम वोट बैंक की बिहार चुनाव में निर्णायक भूमिका रहती आई है। प्रधानमंत्री बनने के साथ ही नरेंद्र मोदी ने यह घोषणा की थी कि न खाऊंगा, न खाने दूंगा, लेकिन बहुत जल्दी ये सच सामने आ गया कि केंद्र की भाजपा सरकार और राज्यों की भाजपा सरकारों में खाने वाले भरे पड़े हैं। मध्य प्रदेश के व्यापमं घोटाले की व्यापकता का अंदाज़ लगा पाना आसान नहीं है। 40 से ज्यादा गवाह मार डाले गए। ललित मोदी मामले में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे बुरी तरह फंसी हैं। इस मुददे पर संसद चल नहीं पाई। प्रधानमंत्री मौन रहे। इनके अलावा, केंद्र सरकार में जो भ्रष्टाचारी बैठे हैं, उनके बारे में किसे नहीं पता। बस झूठ के बल पर नरेंद्र मोदी सरकार चल रही है और घरेलू हो या विदेशी, हर मोर्चे पर फेल है। सरकार भगवाकरण की नीतियों को जमकर बढ़ावा दे रही है। हर तरह के आततायी तत्वों को सरकारी संरक्षण हासिल हो रहा है। नागपुर स्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्यालय की सुरक्षा सीआईएसएफ के हवाले कर दी गई। तो क्या सरकार संघ की है और मोदी मुखौटा हैं यह सवाल हर जागरूक व्यक्ति के मन में उठ रहा है। महंगाई, बेरोजगारी, किसानों की आत्महत्याएं और सत्ता संरक्षण में पल रहे भगवाधारियों के अनाप.शनाप बयानों से लोग आजिज आ गए हैं। ऐसे में, अब बिहार विधानसभा चुनाव से ही भाजपा विरोधी दलों को उम्मीद है। बिहार ही अब ये तय करेगा कि देश में भगवा की दशा.दिशा क्या होगी। बिहार में भगवा की हार.जीत से देश में नए राजनीतिक समीकरण निश्चित तौर पर बनेंगे। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि बिहार विधानसभा चुनाव से भाजपा और उसके विरोधियों को अपनी ताकत का सही अंदाज हो सकेगा।

बरबाद इनां आज़ादियां तो
होये असी वी हां होये तुस्सी वी हो
अखां दी लाली पई दसदी हे
रोये असी वी हां ते रोये तुस्सी वी हो
(पाकिस्तान के प्रसिद्ध वामपंथी शायर उस्ताद दामन द्वारा
1947 के विभाजन पर लिखी नज़्म का एक शेर)
यहां खाक आज़ादी का जश्न मने
यहां खाक दिल के कमल खिले
जहां जिन्दगी की ज़रूरतों का भी
हसरतों में शुमार हो

-डॉ.लाल खान

तुर्की-ब-तुर्की

अमितशाह भला कहां मुंह छिपाय!

''जेल से व्यक्ति और बिगड़ कर निकलता है।''

गया में बिहार विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव की चारा घोटाले में सज़ा को लेकर प्रधानमंत्री मोदी की टिप्पणी।

हमारा कहना है-

0 चुनावी मंच से लालू-नितीश को गरियाने की गर्मी में आपको मोदी जी इतनी माफ़ी तो दी ही जा सकती हे कि आप साथ बैठे पार्टी अध्यक्ष अमितशाह के जघन्य अपराधों में जेल में वर्षों गुजारने की बात भूल गये होंगे। काश यह चुटकी लेते समय आपकी नज़र शाह के खाये-अघाये चेहरे पर पड़ी होती तो उस मुरझाये कमल पर तरस खाकर आप जेल वाली टिप्पणी बार-बार न करते। लालू यादव तो वहां थे नहीं और शाह को यह भी लग सकता था कि कहीं निशाना उन पर तो नहीं साधा जा रहा।

0 हालांकि आपको संदेह का लाभ दिया जाना चाहिये। आखिर आपने कहीं भी 'तड़ीपार' शब्द का इस्तेमाल तो नहीं ही किया। लालू और शाह में यही फ़र्क है कि जमानत के बाद लालू की बिहार में आवाजाही पर रोक नहीं थी, जबकि अदालत ने शाह को जमानत देते समय उन्हें गुजरात छोड़ने का हुक्म भी सुनाया था। लिहाज़ा वर्षों तक शाह को गुजरात से बाहर रहना पड़ा। मोदी जी, आपको यह शब्द याद भी कैसे रहता। किसी जमाने में जब केशु भाई पटेल गुजरात के मुख्यमंत्री और अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री हुआ करते थे, आप को भी भाजपा ने गुजरात से तड़ीपार किया हुआ था। उस दौरान आपकी 'विध्वंसक' गतिविधियों को देखते हुए पार्टी ने उचित समझा कि आपको हरियाणा, पंजाब और हिमाचल प्रदेश का प्रभारी महासचिव बना कर गुजरात में आपका प्रवेश बन्द कर दिया जाय।

0 कौन नहीं जानता कि इतिहास को लेकर आपकी जानकारी कितनी हास्यास्पद है। लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान तो आपने तक्षशिला, जो पाक-अफ़गान सीमा पर है, को बिहार में बता दिया था। इस बार भी आप भूल गये कि गांधी और भगत सिंह जैसे लाखों स्वतन्त्रता सेनानी अंग्रेज़ों के जेल रूपी नर्क में रहे हैं। यहां तक कि आप लोग़ों के पूज्य सावरकर भी। क्या आप यह कहना चाहते हैं कि ये सब लोग जेलों से बिगड़ कर या बुरे इन्सान बन कर बाहर आये ? आपने एक ही लाठी से सभी को हांक दिया ? आपातकाल में स्वयं आपके वरिष्ठ वाजपेयी, आडवाणी समेत हज़ारों संघी भी तो इन्दिरा की तानाशाही का शिकार होकर जेल गये थे। क्या उन्हें भी आप लालू और शाह की श्रेणी में शामिल कर रहे हैं ?

0 बेशर्मी की हद तो यह कि जब आप चारा घोटाले के दोषी लालू का उपहास बना रहे थे तो उसी सांस में व्यापमं घोटाले के शिवराज सिंह चौहान और ललितगेट काला धन प्रकरण की विजयराजे सिंधिया को कार्यकुशलता का प्रमाणपत्र दे रहे थे। दूसरे शब्दों में आप बिहार की जनता को इतना बड़ा उल्लू समझते हैं कि वह आपकी नीयत से अनभिज्ञ रहकर अपना वोट आपकी झोली में डालती रहेगी। शायद आप भूल गये कि काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती। एक जमाना था जब राहुल गांधी से चुनावी भाषण कराना मतलब अपनी सीटें कटवाना होता था। इतनी जल्दी यही बात आप पर भी चिपक जायेगी, किसे पता था।